Volume-4, Issue-8, August-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Education

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Nisha Shrivastava — HOD, Education Dept. Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalay , Durg(C.G.)

Hiteshwari Ravte — Asst. Professor, Education Dept. Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalay , Durg(C.G.)

Rashmi Singh — M.Ed. Student Ghanshyam Singh Arya Kanya Mahavidyalay , Durg(C.G.)

ABSTRACT

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता का तुलनात्मक अध्ययन है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता के लिए 200 विद्यार्थियों (शहरी विद्यालय के 100 विद्यार्थियों तथा ग्रामीण विद्यालय के 100 विद्यार्थियों) का चयन किया गया है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता के अध्ययन हेतु *Dr.(Mrs.) Sadia Mahmood and Dr.(Smt.) Tahira Khatoon* द्वारा निर्मित गणितीय चिंता मापनी का प्रयोग किया गया है। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण 'टी' मूल्य द्वारा किया गया है।

KEYWORDS :

प्रस्तावना– डॉ.रंजन दास एवं गूनेन्द्र चंद्र दास (2013)–शोध अध्ययन के अनुसार गणित चिंता को गणित में खराब प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण कारक माना है। ता. हिरा खातुन एवं सादिया महमूद (2010)–शोध अध्ययन के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में औसत स्तर की चिंता बनी रहती है। महिलाएँ पुरूषों की तुलना में गणित के प्रति अधिक चिंता प्रदर्शित करती है। सुसान्ता राय चौधरी (2014)–शोध अध्ययन के अनुसार गणित चिंता ,गणित समस्या को सुलझाने की दिशा में मनोवैज्ञानिक तौर पर नकारात्मक मनःस्थिति के रूप में इंगित किया, गणित चिंता बच्चों के रोजग. ार चयन तथा गणित शिक्षण को बहुत अधिक प्रभावित करती है, ऐसे छात्र जिनकी उच्च गणित उपलब्धि है वे निम्न स्तर की गणित चिंता प्रदर्शित करते है। एस.एस. ग्रेवाल तथा कौर (1990)– शोध अध्ययन के अनुसार उच्च स्तरीय चिंता वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि खराब रही, जबकी निम्न स्तरीय चिंता वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि अच्छी रही। रामचन्द्रन (1990)–शोध अध्ययन के अनुसार छात्राओं का शैक्षणिक प्रदर्शन छात्रों की तुलना में उत्तम है।

उद्देश्य–

- षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा दसवीं के षहरी क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र के मध्य गणित के प्रति चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कक्षा दसवीं के षहरी क्षेत्र के छात्रा एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रा के मध्य गणित के प्रति चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श हेतु शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता के लिए 200 विद्यार्थियों (शहरी विद्यालय के 100 विद्यार्थियों तथा ग्रामीण विद्यालय के 100 विद्यार्थियों) का चयन किया गया है।

उपकरण–प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा 10वीं के विद्या. र्थियों में गणित के प्रति चिंता के अध्ययन हेतु Dr.(Mrs.) Sadia Mahmood and Dr.(Smt.) Tahira Khatoon द्वारा निर्मित गणितीय चिंता मापनी का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना एवं विश्लेषण–

H_1 षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 1

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी विद्यार्थी	100	32.48	11.44	1.90••
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	100	35.21	8.66	
**0.01 स्तर पर सार्थकता, *0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant					

सारणी क्रमांक – 1 का अवलोकन करने पर df =198 पर t का मान 1.90 प्राप्त हुआ। P>.01 and P>.05 स्तर पर ज का मान सार्थक नही है। अतः स्पष्ट है कि षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नही पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_2 कक्षा दसवीं के षहरी क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र के मध्य गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 2

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी छात्र	50	31.98	10.27	2.69**
2.	ग्रामीण छात्र	50	36.88	7.82	
**0.01 स्तर पर सार्थकता, *0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant					

सारणी क्रमांक – 2 का अवलोकन करने पर df =98 पर t का मान 2.69 प्राप्त हुआ। P>.01 and P>.05 स्तर पर t का मान सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा दसवीं के षहरी क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र के मध्य गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_3 कक्षा दसवीं के षहरी क्षेत्र के छात्रा एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रा के मध्य गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 3

क्रं.	चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
1.	षहरी छात्रा	50	32.98	12.50	0.25 ••
2.	ग्रामीण छात्रा	50	33.54	9.44	
**0.01 स्तर पर सार्थकता, *0.05 स्तर पर सार्थकता, •• Not Significant					

सारणी क्रमांक – 3 का अवलोकन करने पर df =98 पर ज का मान 0.25 प्राप्त हुआ। P>.01 and P>.05 स्तर पर t का मान सार्थक नही है। अतः स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा दसवीं के षहरी क्षेत्र के छात्रा एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रा के मध्य गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नही पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों में गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया क्योंकि विद्यार्थियों को गणित एक कठिन विषय लगता है इसलिए वे गणित शिक्षण के स्तर को बढ़ातें है। इन विद्या. र्थियों में गणित के प्रति चिंता समान होती है। षहरी क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र के मध्य गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर पाया गया क्योंकि षहरी क्षेत्र के छात्रों को अनेक भौतिक सुविधाएं प्राप्त होती है। और ग्रामीण छात्रों को काम ज्यादा रहता है और वे अपनी पढ़ाई में कमी कर देते है। षहरी क्षेत्र के छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं के मध्य गणित के प्रति चिंता में सार्थक अंतर नही पाया गया क्या. ंकि छात्राएं सचेत रहती है और पढ़ाई के प्रति जागरूक रहती है।

सुझाव–

- विद्यालय में गणित विशय पढ़ाने के लिये योग्य एवं अनुभवी शिक्षक की नियुक्ति की जानी चाहिए।
- विद्यालय में विद्यार्थियों को गणित पढ़ने के लिये पृथक कक्षा की सुविधा दी जानी चाहिए।

- विद्यालय में गणित के लिए अनुवर्ग शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
- विद्यालय में गणित को रूचिकर बनाकर पढ़ाया जाना चाहिए।
- प्रत्येक साल में बच्चों के द्वारा गणित से संबंधित का कार्यक्रम रखा जाना चाि हये।
- विद्यालयों में साल में गणित से संबंधित संगोश्ठी, समाचार, सम्मेलन का आयो. जन किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिये समय–समय पर गणित विषय से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यालयीन वातावरण इस प्रकार का हो कि सभी विद्यार्थियों को समान और उचित अवसर प्राप्त हो सके।
- विद्यार्थियों को जीवन संघर्श के योग्य बनाकर उनमें गणित के प्रति उचित सम. ायोजन किया जा सकता है।
- पाठ्यक्रम छात्रों की रूचि क्षमता तथा मानसिक स्तर के अनुसार हो।
- मनुश्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक व्यवस्था का समायोजन उनके अंतर होना निहायत ही आवश्यक है के बारे में उचित दिशा निर्देशन देना चाहिए।
- जीवन के क्षेत्र में षारीरिक, बौद्धिक, मानसिक विकास हेतु समायोजन की महत्ता को कक्षा में प्रायोगिक तरीके से समझाया जाना चाहिए।

REFERENCES

• bhatnagar, r. p., & bhatnagar, m. (2007). education research. merath: lathal book depo,41-105. | • kapil, h. k. (2014-15). statastic. agra: agrawal publication,381-455. | • negi, j. s., & negi, r. (2007). mathematics teaching. agra: vinod pustak mandir26-45,57. | • pathak, p. d. (2012). education psychology. agra: agrawal publication,3-6. | • pathak, p. d., & tyagi, g. d. (2006). philosophy principle of education. agra: vinod pustak mandir,1-20. | • ravat, m. s., & agrawal, m. b. (2006). mathematic teaching. agra: vinod pustak mandir,6-7,8-13. | • sareen, s., & sareen, a. (2012). methods of educational research. agra: agrawal publication,27-377. | • sharma, a. r. (2015). education research and shode process. merath: r.lal.book depo,678-758. | • sharma, r. k., dube, s. k., & sharma, h. s. (2011). psychological foundation of education. agra: radha prakshan mandir,168-169. | • shashtri, k. n. (2006). education emerging in indian society. delhi: arjun publishing house,1-12. | • singh, a. k. normal education psychology. | • singh, r. p., & upadhya, j. k. (2009). development psychology. delhi: motilal sarsidas,506-509 |